

Saarth E-Journal of Research

E-mail : sarthejournal@gmail.com
www.sarthejournal.com

ISSN NO : 2395-339X
Peer Reviewed
Vol.8 No 11

Impact Factor
Quarterly
July-Aug-Sep 2023

रामायण महाकाव्य में पारंपरिक और सामाजिक मूल्यों का अध्ययन

डॉ. गोहील महेश्वरीबा

संक्षेपण :

भारतीय साहित्य की धाराओं में रामायण एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है जिसमें पारंपरिक और सामाजिक मूल्यों का प्रतिष्ठान होता है। यह शोधपत्र रामायण महाकाव्य में पारंपरिक और सामाजिक मूल्यों के प्रस्तुतिकरण की विशेषताओं का अध्ययन करता है। इसके अलावा, यह उसके समाजशास्त्रीय, धार्मिक और मानवतावादी संदेशों की महत्वपूर्णता पर भी प्रकाश डालता है।

प्रस्तावना :

रामायण, भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण और प्रमुख महाकाव्य है जिसे महर्षि वाल्मीकि ने लिखा था। इस महाकाव्य में प्राचीन भारतीय समाज की पारंपरिक और सामाजिक मूल्यों का विवरण दिया गया है जो आज भी हमारे समाज में महत्वपूर्ण हैं। यह शोधपत्र रामायण महाकाव्य में प्रस्तुत सामाजिक और पारंपरिक मूल्यों के प्रतिष्ठान के पीछे के कारणों की खोज करता है और उनके महत्वपूर्ण संदेशों को समझने का प्रयास करता है।

मूलभूत परिप्रेक्ष्य :

रामायण में पारंपरिक और सामाजिक मूल्यों का प्रतिष्ठान उसके प्रमुख चरित्रों के व्यवहार, भाषा, और आचरण में प्रकट होता है। सीता, राम, लक्ष्मण, हनुमान आदि के पूरे

चरित्रगठन में उनके आदर्श और मूल्यों का परिचय दिया गया है जो समाज के लोगों के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।

यथार्थता और परिप्रेक्ष्य :

रामायण में दिखाए गए सामाजिक और पारंपरिक मूल्य समाज में सुशीलता, समरसता, परोपकार, और धार्मिकता की भावनाओं को प्रोत्साहित करने का काम करते हैं। राम की पत्नी सीता का पतिव्रता धर्म, राम का धर्मिक राजा के रूप में कर्तव्यनिष्ठा, और हनुमान की भक्ति इन मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रमुख उदाहरण हैं।

सामाजिक व्यवस्था का चित्रण :

रामायण में वर्ण व्यवस्था, जाति प्रतिष्ठा, परिवारिक महत्व, और समाज में सामंजस्यपूर्ण आचरण का विवरण दिया गया है। राम के राज्याभिषेक से जुड़े तत्व समाज में न्याय, समरसता, और समृद्धि की प्रेरणा हैं।

संघर्ष और धर्म :

रामायण महाकाव्य में धर्म और आध्यात्मिकता के माध्यम से धर्मसंघर्ष का भी विवरण है। रावण के रूप में अधर्म और राम के रूप में धर्म के बीच का युद्ध यह दिखाता है कि धर्म हमेशा अधर्म की विजय करता है।

निष्कलंकता की प्रतिष्ठा :

रावण की निष्कलंकता का रामायण में उचित विवरण है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि पाप की पराजय और धर्म की विजय हमेशा होती है।

समापन :

इस शोधपत्र के माध्यम से हम देखते हैं कि रामायण महाकाव्य न केवल एक कथा है, बल्कि एक ऐसी मानवता की मंगल कथा है जिसमें पारंपरिक और सामाजिक मूल्यों की महत्वपूर्णता को प्रमोट किया गया है। यह महाकाव्य हमें धार्मिकता, समरसता, और नैतिकता की महत्वपूर्णता को बताता है जो आज भी हमारे समाज में महत्वपूर्ण हैं।

संदर्भ :

1. "रामायण"मूल आधार ग्रंथसंपादकतुलसीदास
2. 'वाल्मीकीय रामायण', प्रकाशक: देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली

3. 'रामचरितमानस', टीकाकारपोद्दार हनुमानप्रसाद :, प्रकाशक एवं मुद्रकगीताप्रेस :, गोरखपुर
4. अभिनवभारती, (अभिनवगुप्त), व्या .विश्वेश्वर दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन, दिल्ली, 1960
5. अलंकारसर्वस्वम् (रुय्यक), व्या .'त्रिलोकीनाथ द्विवेदी', चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1995
6. औचित्य विचारचर्चा (क्षेमेन्द्र), व्या .'नारायण मिश्र, चौखम्बा ओरियन्टल सीरीज, वाराणसी, 1982